दर्पण
मुकेश कुमार
आलोक प्रकाशन

# दर्पण

## कविताओं का संग्रह

- लेखक -

**मुकेश कुमार**

आलोक प्रकाशन

## :: अनुक्रम ::

1. बाबूजी जोड़ी जूते मेरे लिए भी ला देना
2. दूर कहीं दूर से आवाज़ ये आ रही थी
3. गर्व तू किस बात की करता है
4. ईश्वर और मैं
5. कसम ये हमने खाई है
6. वो आज़ाद परिंदा था
7. कमल की पंखुड़ियों सा खिलकर
8. मन ये करता है
9. ढूंढें तुझे
10. अक्सर वो उसकी बातें करता था
11. चुप हो जा मन बावरे
12. कैसे मैं अपना साया छोड़ दूं
13. लफ़्ज़ों से कह दूं जिनको
14. हिन्दी भाषा
15. देश तुझ पर जान न्योछावर
16. ख़ुशी क्या है?
17. नीला है आसमान

# बाबूजी जोड़ी जूते मेरे लिए भी ला देना ...

बाबूजी जोड़ी जूते मेरे लिए भी ला देना,
भैया पहन के जिसे दौड़े हैं,
मेरे भी तू पंख लगा देना।
बाबूजी जोड़ी जूते मेरे लिए भी ला देना...

गांव की पगडंडियों में कांटे बीछे हैं,
मुझे भी चलना है दूर तलक,
भैया सा करम मुझ पर भी तू बरपा देना।
बाबूजी जोड़ी जूते मेरे लिए भी ला देना...

कुछ कर दिखाने का मेरा भी सपना है,
आसमां से भी दूर जाने का करता मन अपना है,
मुझे भी आगे जाने की राह तू दिखला देना।
बाबूजी जोड़ी जूते मेरे लिए भी ला देना...

एक बार जो तूने हौसला मेरा बढ़ा दिया,
एक बार जो तूने हाथ सर पे मेरे फ़िरा दिया,
फिर उस ख़्वाब को पूरा करने का फ़र्ज़ अपना है।
बाबूजी जोड़ी जूते मेरे लिए भी ला देना...

ՃՃՃ

# # दूर कहीं दूर से आवाज़ ये आ रही थी ...

दूर कहीं दूर से आवाज़ ये आ रही थी,
धुंधली सी थी मग़र,
कानों को दस्तक वो दे जा रही थी,
पास रहकर भी जिसे कोई सुन ना पाया,
दूर से ही दिलों में आग वो लगा रही थी।
दूर कहीं दूर से आवाज़ ये आ रही थी...

बातों में जिसकी सच्चाई थी,
झूठ का दरिया जिसे दबा रही थी,
रुकी नहीं वो बाँहों में हिम्मत का हौसला,
वो बढ़ा रही थी।
दूर कहीं दूर से आवाज़ ये आ रही थी...

रखते हैं सीने में नफ़रत की चिंगारी,
करते हैं देश से जो ग़द्दारी,
उन मग़रूरों से लड़ने की,
आवाज़ वो हम तक पहुंचा रही थी।
दूर कहीं दूर से आवाज़ ये आ रही थी...

मज़दूर तो मज़बूरी में चुप हो गए,
कायर तो ज़ख्म सहकर भी सो गए,
पर इंसानियत को बचाने की ख़ातिर,
अपने जान की बाज़ी वो लगा रही थी।
दूर कहीं दूर से आवाज़ ये आ रही थी...

हज़ारों दिलों में जला के सरफ़रोशी का शम्मा,
चल पड़ी वो संग उनके,
आवाज़ जो कहीं दूर से उसे बुला रही थी।
दूर कहीं दूर से आवाज़ ये आ रही थी...

४४४

## # गर्व तू किस बात की करता है ...

गर्व तू किस बात की करता है,
क्यों करता है तू अभिमान रे ...

अपने कुल की बड़ाई है करता,
आगे उसके सबको तुच्छ है समझता,
भीतर तो बनावट है एक समान रे।
क्यों करता है तू अभिमान रे ...

सबमें एक श्वास है चलता,
सबके रग में ईक रंग है दौड़ता,
काया है सबकी समान रे।
क्यों करता है तू अभिमान रे ...

ऊंचे पद पर गर्व है करता,
छोटों को धूल है समझता,
ये तो नहीं है ऊंच की पहचान रे।।
क्यों करता है तू अभिमान रे ...

४४४

# # ईश्वर और मैं ...

ये वक्त तो बेहद बुरा है,
उससे भी बुरा तो मेरा हाल है।
चारों ओर मौतों का आलम है,
मेरी धड़कनें भी अभी बेहाल है।।

दवा तो अब बेअसर है,
दुआ भी कहाँ मेहरबान है।
अभी वैद्य भी कहां मिल रहे हैं,
वैद्यशाला भी तो कतारों में तमाम हैं।।

जिन्हें बचाने की कोशिश में भटक रहे हैं दर बदर,
वो सांसें भी तो कुछ देर की मेहमान हैं।
आज हमारी भी सुधि ले लो स्वामी,
कण-कण में तो तेरा ही मुक़ाम है।।

भगवन को आज क्या हो गया है,
आज क्यूं वो दे रहा ऐसा फरमान है।
सांसें भी तो उनकी ही देन है,
फिर क्यूं वो आज मिटाता इंसान है।।

ख़्वाब में आकर प्रभु ने कहा,
कर याद तू पिछली बातों को,
मैंने तुझे सुख तो बेशुमार दिया,

किया किरपा तुझ पर अपरम्पार है।।

दुख की घड़ी जब तेरे निकट आई है,
तभी तुझे मेरी याद आई है।
मैं तुझमें हूं तू मुझमें है, पर तूने तो मुझको ही भुला दिया,
इंसान तू तो बड़ा ही बेईमान है।।

***

## # कसम ये हमने खाई है ...

रेत के तूफ़ां हों या, बर्फ की आंधी हो,
दुश्मन कैसा भी हो, हिम्मत कहां उसने ये पाई है।
रख दे कदम, मेरे वतन की जमीं पे,
ऐसी ताकत कहाँ, दुश्मन की कोई परछाई है।
वतन की रखवाली की, कसम ये हमने खाई है ...

वो गुस्ताखी करते हैं, पर्वतों से टकराने की,
किसी गुस्ताख़ की कहां, ऐसी ऊंचाई है।
देश की बरकत के लिए, देश की उल्फ़त के लिए,
दीवार अपनी जां की, जो हमने बनाई है।
वतन की रखवाली की, कसम ये हमने खाई है...

तेज बहती दरिया की धारा को रोक दे,
मेरे देश के सागर में वो गहराई है।
लेते हैं जब-जब अंगड़ाई, वतन के रखवाले,
तब-तब आफ़त, दुश्मनों पे बन आई है।
वतन की रखवाली की, कसम ये हमने खाई है...

४४४

## # वो आज़ाद परिंदा था ...

वो आज़ाद परिंदा था,
कुछ काम तो ना था,
पर अपने हुनर के सहारे वो ज़िंदा था।

पांच बरस पहले उसके सामने,
उसने चीख-चीख कर कहा था,
रहने को तुझे घर दूंगा,
तेरी गरीबी दूर कर दूंगा,
तुझे रोजी और रोटी दूंगा,
इसी दिलासे से वो कभी नहीं फिकरमन्दा था।

उसने कहा था कि आज़ाद मुल्क में,
तुझे सारी आज़ादी दूंगा,
हर दुःख-दर्द में तेरे साथ रहूँगा,
हर मुसीबतों से तेरी रक्षा करूंगा,
उनकी इन बातों से वो बेहद संजीदा था।

बरसों बाद उसने फिर से,
उसी दूरदर्शन से ऐसी बात कही।
फिर से ऐसी बातें सुनकर वो,
मन ही मन उससे शर्मिंदा था।।

אאא

## # कमल की पंखुड़ियों सा खिलकर ...

कमल की पंखुड़ियों सा खिलकर,
तुम यूं ही सदा मुस्कुराते रहना।
राहों में फूल हों या हों कांटे,
हंसकर कदम सदा बढ़ाते रहना।।

गर मझधार में जो फंस जाओ तुम,
डटकर निकलने का हौसला सदा बनाये रखना।
ये बारिश भी थम जाएगी, तूफ़ां भी गुज़र जाएगा,
दिल में विश्वास का दीपक सदा जलाए रखना।।

४४४

## # मन ये करता है ...

बनके पंछी नील गगन में,
उड़ जाने को दिल ये करता है।
दूर जाकर इस धरती से,
आसमां को छू जाने का मन ये करता है।

कोई तो डोर होगी मस्त पवन की,
जिसके सहारे झूम जाने का मन ये करता है।

इस नाँव में चलते-चलते उब गया हूं,
गहरे सागर में गोता लगाने का मन ये करता है।

रिमझिम सावन की फ़ुहार बन जाऊं मैं,
बारिश में भीग जाने का मन ये करता है।

समां कर सूरज की किरणों में,
सारे जहाँ को देख जाने का मन ये करता है।।

४४४

## # ढूंढें तुझे ...

ढूंढें तुझे, ढूंढें तुझे,
भीगी-भीगी पलकें ये ढूंढें तुझे...

जो तुम रुठ गए, राहों में यूं हमें छोड़ गए,
क्या ख़ता हुई थी हमसे,
जो हमें तन्हा जीता यूं छोड़ गए।
ढूंढें तुझे, ढूंढें तुझे,
भीगी-भीगी पलकें ये ढूंढें तुझे...

रहते हैं आंगन में तेरी, करते हैं महसूस तुझे हर जगह,
कभी हंसते-कभी रोते, हर पल खयालों में हमें,
क्यूँ खोया-खोया छोड़ गए।
ढूंढें तुझे, ढूंढें तुझे,
भीगी-भीगी पलकें ये ढूंढें तुझे...

जो तुम थे तो ना कर पाए हम बातें जी भर के,
जो तुम ना हो तो, ख़ुद से बातें करने,
क्यूँ हमें गुमशुदा छोड़ गए।
ढूंढें तुझे, ढूंढें तुझे,
भीगी-भीगी पलकें ये ढूंढें तुझे...

अब तो तेरे बिना कुछ भी अच्छा लगता नहीं,
हर जगह तू ही तू नज़र आता है,
क्यूँ अपनों से ख़ुद को करके ज़ुदा छोड़ गए।
ढूंढें तुझे, ढूंढें तुझे,
भीगी-भीगी पलकें ये ढूंढें तुझे...

ᛡᛡᛡ

# अक्सर वो उसकी बातें करता था ...

अक्सर वो उसकी बातें करता था,
जो औरों की नज़रों में,
उसके पास कभी थी ही नहीं।

उसे हमेशा यही लगता था कि,
पास उसके जितना है,
उतना किसी और के पास है नहीं।

शायद उसे ये भ्रम हो गया था,
नहीं नहीं,
भ्रम नहीं, उसे पूरा यकीन था,
और इसी यकीं के कारण वो,
खुद को राजा समझने लगा था।

वो अक्सर औकात की बातें करता था...

XXX

## # हिन्दी भाषा ...

जिसमें स्वर है और व्यंजन है,
बावन अक्षरों का, शुद्ध प्रबन्धन है,
वन्दन है, तुझे मेरा वन्दन है।

जर्मन, अंग्रेजी, चीनी भी मैंने सीखी,
भाषा तो मैंने हजारों सीखी,
पर हिंदी समान दूसरी भाषा है नहीं कोई।

भारत ही नहीं, सारी दुनिया में,
हिंदी समान दूसरी भाषा है नहीं कोई,
वन्दन है, तुझे मेरा वन्दन है,
हिंदी तुझे मेरा वन्दन है।।

ॐॐॐ

## # चुप हो जा मन बावरे ...

चुप हो जा मन बावरे,
चले नई अब तोर कोनो चाल रे।
नई हे मोला तोर से कोई काम रे।

छीन मा आथस, छीन मा जाथस,
छीन मा उड़ जाथस अगास रे।
छीन मा पिरित कराथस,
छीन मा कराथस बैर रे।

छीन मा भटकाथस,
छीन मा फंसाथस, करथस बड़ बेचैन रे,
मन राजा तै अब्बड़ खेल खेलाथस,
नई देखस दिन अउ रैन रे।

बिन पियास के भी पियासा दिलाथस,
पियास बढ़ाके फेर रोग लगाथस,
तन के भीतर लगाथस आग रे,
मन तैं हस बड़ बिगड़ैल रे।

विवेक मोर भाई हे,
ज्ञान हे गुरु मोर एक रे,
संतोष जइसन संगवारी हे,
धीरज जइसन नई हे दूसर तैं देख रे।

चुप हो जा मन बावरे,
चले नई अब तोर कोनो चाल रे।
नई हे मोला तोर से कोई काम रे।

४४४

## # कैसे मैं अपना साया छोड़ दूं ...

तुम कहती हो कि,
मैं उनका साया छोड़ दूं,
बोलो तो ये जहां छोड़ दूं,
कैसे मैं साया यूं पुराना छोड़ दूं।

जिनके साये में मेरा पचपन बीता,
पकड़कर उंगली मैंने चलना सीखा,
साये में जिनके मैंने जीना सीखा,
तुम कहती हो मैं वो सितारा छोड़ दूं।

बोलो तो आना-जाना छोड़ दूं,
बोलो तो जीना-मरना छोड़ दूं,
बोलो तो सांसें लेना छोड़ दूं,
पर साया उनका मैं कैसे छोड़ दूं।

तुम तो अभी अभी आई हो,
तुम भी तो मेरी परछाई हो,
तेरे लिए तो मैं जग सारा छोड़ दूं,
पर कैसे मैं माँ का सहारा छोड़ दूं,
कैसे मैं अपना साया छोड़ दूं।।

४४४

# लफ़्ज़ों से कह दूं जिनको...

लफ़्ज़ों से कह दूं जिनको, ऐसी बात वो है नहीं।
बात ऐसी है, जिनमें कोई बात है नहीं।

बंद आंखों से महसूस कर लो उन बातों को,
ये सुनने वाली बात है नहीं।
लफ़्ज़ों से कह दूं जिनको, ऐसी बात वो है नहीं।

ना साज़ है ना सरगम है,
संगीत की कोई तान है नहीं।
लफ़्ज़ों से कह दूं जिनको, ऐसी बात वो है नहीं।

ना कोई राग पुराना है, ना इसमें कोई तराना है,
सुरों का कोई ताज़ है नहीं।
लफ़्ज़ों से कह दूं जिनको, ऐसी बात वो है नहीं।

ना ही बातों का कोई शोर है, ना ही इन बातों में कोई
और है,
इनमें किसी का जोर है नहीं।
लफ़्ज़ों से कह दूं जिनको, ऐसी बात वो है नहीं।

ये यादें हैं उन रिश्तों की, ये रातें हैं उन सपनों की,
इन बातों के अलावा कोई बात है नहीं।
लफ़्ज़ों से कह दूं जिनको, ऐसी बात वो है नहीं।।

४४४

## # देश तुझ पर जान न्योछावर ...

तन न्योछावर मन न्योछावर, देश तुझ पर ये जान न्योछावर,
कर लो दुश्मन लाख कोशिशें, देश को मिटा नहीं पाओगे।
देश की शान की खातिर, जान की बाज़ी लगा जायेंगे हम,
दुश्मनों का अंत करने, जमीं आसमां एक कर जायेंगे हम।

करते हैं गुणगान वतन का, करते हैं सम्मान वतन का,
जल उठी है शम्मा दिल में, उसे बुझने नहीं देंगे हम।
चाहे लग जाये गोलियां सीने पे, कट जाये शीश गम नहीं,
बलिदान दे देंगे पर दिल से आह निकलने नहीं देंगे हम।

वतन पर मिटने को तैयार हैं हम, देश की सीमा के दीवार हैं हम,
फक्र करते हैं वतन पर, तिरंगे की आन को मिटने नहीं देंगे हम।

**अपनी देश की मिट्टी के खातिर, अपनी धरती की सरहद के खातिर,**
**दी है वीर सपूतों ने जो कुर्बानियां, उसे जाया होने नहीं देंगे हम।।**

**४४४**

# ख़ुशी क्या है? ...

क्या पैसों का मिलना ही ख़ुशी है?
क्या पद-प्रतिष्ठा, मानसम्मान का होना- ही ख़ुशी है?
क्या बंगला-गाड़ी, मोटर कार का होना-ही ख़ुशी है?
क्या दूसरों के दुःख से ख़ुश होना ही ख़ुशी है?
मेरा मानना है कि इस जहां में अपनेअपनों को ख़ुश - देखकर,
ख़ुश होना ही असली ख़ुशी है।।

ጰጰጰ

# नीला है आसमान ...

नीला है आसमान,
पीला है सूरज,
टिम टिम चमकते सफेद तारे,
हरा है तोता,
काली है कोयल,
रंग बिरंगे तितली प्यारे प्यारे,
लाल है टमाटर,
बैगनी है बैगन,
गुलाबी गुलाब भाते हैं,
मन को सारे।।

४४४

संपर्क :

Mail: makpower123@gmail.com,
Twitter: @MukeshKumarCG
Facebook: /MukeshKumarCG20
Instagram: MukeshKumarCG

मुकेश कुमार
MAKPOWER123@GMAIL.COM